ओम् शान्ति

27–9–2014 ओआरसी (दिल्ली)

दिल्ली ज़ोन की वरिश्ठ टीचर्स बहनों के साथ परम आदरणीया गुल्ज़ार दादी जी की मुलाकात

सबके नैनों में कौन? मेरा बाबा। मेरा बाबा कहने से नशा चढ़ता है। मेरा मीठा बाबा, प्यारा बाबा पहले मेरा है। मेरा कभी भूलता नहीं। मेरा कहने से चलते–फिरते याद रहेगा। बाबा तो सारे विश्व का है, लेकिन पर्सनल मेरा है, इसलिए बाबा कहते हैं मेरापन लाओ बाबा में तो स्वतः ही याद रहेगा। हम तो हैं ही सरेण्डर, बाबा में ही सारा संसार है, इसलिए हमारे लिए सहज है। भले सेवा में बिज़ी रहते हैं, मुरली सुनते वा सुनाते हैं, लेकिन मुरली की शुरूआत बाबा और बच्चों से होती है। मुरली सुने बिगर चैन नहीं आता। सारा दिन मुरली का ही चिन्तन चलता है। टीचर्स तो हैं ही इसी धन्धे के लिए मुरली सुनना और सुनाना। मुरली किसकी है वह भूलेगा नहीं। मेरा बाबा पर्सनल है, भले सबका है। मेरापन कभी भूल नहीं सकता। शरीर देखो मेरा है लेकिन भूलता नहीं। बाबा कहते हैं देह को भूलो लेकिन फिर भी याद रहता है क्योंकि मेरा है, ऐसे बाबा भी कभी न भूले। बातें तो आती हैं लेकिन बाबा न भूले इसी प्वाइन्ट पर नम्बर मिलते हैं। कर्म करते कितना समय बाबा को याद किया यह चेक करो, यह सेवा किसने दी है? बाबा ने। यह याद रहे तो भूल नहीं सकता। जैसे कोई अच्छा खाना बनाता है तो बनाने वाले की याद रहती है, वैसे ही सेवा बाबा की है, बाबा ने दी है, यह याद रहे तो बाबा भूल नहीं सकता। अभी दिल्ली वालों को डबल सेवा करनी है, यह ज़िम्मेवारी टीचर्स की है। हमें दिल्ली को तैयार करना है राज करने के लिए। कुछ तो ड्यूटी लेंगे ना। हमारे कितने भाई–बहनें आते हैं दिल्ली में, खुशी है ना। दिल्ली में ही सबको आना है। भविष्य में राजधानी दिल्ली ही होगी, इसलिए हमें दिल्ली को सजाना है। पहले चैतन्य

फूलों को (स्टूडेन्ट्स) सजाना है। दिल्ली में सबसे पहले सबकी नज़र विद्यार्थियों पर जाती है। दिल्ली को हम ऐसा तैयार करें जो दिल्ली निर्विघ्न बन जाए। बाबा चार्ट देखे तो दिल्ली का चार्ट निर्विघ्न हो। हमारी अवस्था ऐसी हो जो बाबा नेचुरल याद रहे। हमारा कर्म उसी प्रमाण हो जैसा हमें बाबा ने सिखाया है। बाबा के याद आने से सबकुछ याद आ जाता है। निर्विघ्न रहने के लिए टीचर्स अपने पर अटेन्शन रखे। अमृतवेले उठकर अपनी चेकिंग करो कि मेरे में क्या कमी है फिर उसी प्वाइन्ट पर सिमरण कर उसे समाप्त करो। कारण का निवारण करो और देखो मैं इस कमज़ोरी को ख़त्म करने में सफल रही। दिल्ली में रहने वालों की विशेष ज़िम्मेवारी है क्योंकि सब हमारे पास राज्य करने आयेंगे। हम निमित्त हैं, हमने सबको दिल्ली में आने का निमंत्रण दिया है। निमित्त पर सबका ध्यान जाता है। बाबा कहते ऐसा बनों जो राजधानी में पहले आओ, पहले तो मम्मा बाबा का राज होगा लेकिन उनके साथ हम आयें। दिल्ली को अच्छी तरह सजाओ। आपको दिल्ली में सभी देवी–देवताओं का आह्वान करना है। पहले खुद बनना है, तभी दूसरों का स्वागत कर सकेंगे। दिल्ली विश्व का आधर है, हम ही बनाने वाले हैं। सदा खुश भी रहना है और निर्विघ्न भी रहना है। जितना हो सके यहॉ ही सबको संतुष्ट करना है। हम देने वाले दाता हैं, दे तभी सकेंगे जब स्वयं अन्दर से भरपूर होंगे। जितना हम खुश होंगे हमें देख सब खुश होंगे। ओम् शान्ति!